International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 181-183

"अंधायुग" – कल आज और कल

डॉ० नीना शर्मा
आचार्या, हिन्दी विभाग, आणंद आर्ट्स कोलेज, आणंद, गुजरात

प्रस्तावना

भारत में पुराकथाओं को लेकर हिन्दी साहित्य में कई रचनाएँ हुई है | इन सबके पिछे साहित्यकार का मुख्य उद्देश्य अपने आधुनिक संदर्भो को धारदार बना कर प्रस्तुत करना है | हिन्दी में नाट्य साहित्य में मिथक, पुराण कथाओ का बहुत प्रयोग हुआ है और यह नाटक सफल भी रहे है | "इस मिथकीय प्रयोग पद्धति द्वारा कलात्मक मूल्य और संप्रेषागीयता में काफी वृद्धि भी हुई है | पौराणिक कथा को आधुनिक संदर्भ के अनुकूल निरुपित करने की इस प्रवृत्ति के फल स्वरूप समय सत्य की अभिव्यक्ति में जो शक्ति मिली है वह अत्यंत उल्लेखनीय उपलब्धि है |"१

हिन्दी में इस प्रकार के प्रयोगों का उद्देश्य धार्मिक भावना का प्रेषण करना ही नहीं रहा है | इसका प्रमुख कारण अपने अतित के संदर्भो को वर्तमान से जोड़कर उन्हें विश्लेषित करता है | हिन्दी में ऐसे कई महत्वपूर्ण नाटक है, जिन्होंने सफलता प्राप्त की है | इसी परंपरा में धर्मवीर भारती का काव्य नाटक "अंधायुग" को लिया जा सकता है | भारतीजी का यह बहुचर्चित नाटक महाभारत की कथा पर आधारित है जिसमे महाभारत युद्ध के अठारहवे दिन की संध्या से प्रारंभ होता है | यह नाटक वंदना से प्रारंभ होता है | पहले अंक में कौरव नगरी के अमर्यादित आचरण के साथ दासवृत्ति के जीवन का चित्रण किया है | दूसरा अंक "पशु का उदय" में अश्वत्थामा में जागी पाशविकता का तथा अमानवियता का वर्णन है | अंतराल अंक "पंख चाहिये और पहियाँ" में लेखक की मौलिकता देखने को मिलती है | इसमें महाभारत काल की विकृतियाँ एवं युद्ध की विसंगतिया है | तीसरे अंक में "अश्वत्थामा का अर्द्धसत्य" जिसमे कोख नगरी की दुर्दशा का वर्णन है |

इसी अंक में युयुत्सु की आत्मग्लानि के साथ दुर्योधन की पराजय एवं उसकी बिरिहता के साथ अश्वत्थामा को सेनापति पद ग्रहण करना आदि का उल्लेख है | पांचवे अंक "विजय एक कृमिक आत्महत्या" जिसमे युद्धों परांत पाण्डव के राज्य की स्थापना का उल्लेख के साथ युधिष्ठिर के हृदय परिवर्तन का आभास होता है | युयुत्सु की आत्महत्या कुन्ती गान्धारी धृतराष्ट्र की वन की अग्नि में मृत्यु | नाटक का अंत "प्रभु की मृत्यु" के प्रसंग से होता है |

अंधायुग मात्र अपने युग की परिस्थितियाँ नहीं है | इसके द्वारा आधुनिक युग की स्थितियों का वर्णन हुआ है | "जो किसी भी देशकाल में स्थितियों मनोवृत्तियों और आत्माओं की विकृति तथा दिग्भ्रममदान्धता एवं विनाश हो अंधायुग के जंक बनते है |"२ ये सारी परिस्थितियाँ आज भी है | और यही कारण है कि भारती जी ने अपने नाटक के प्रारंभ में ही इसके जलते भविष्य की ओर संकेत किया है |

उस भविष्य में
धर्म अर्थ हसोन्मुख होंगे
क्षय होगा धीरे-धीरे सारी धरती का |
सत्ता होगी उनकी
जिनकी पूँजी होगी |
जिनके नकली चेहरे होंगे
केवल उन्हें महत्व मिलेगा |
राजशक्तियाँ लोलुप होंगी
जनता उनसे पीड़ित होकर
गहन गुफाओं में छिप छिप कर दिन काटेगी |
(गहन गुफ़ाएँ ! वे सचमुच की या अपने कुंठित अंतर की)

अंधायुग किसी काल विशेष की कथा नहीं है वह मानव जाति की कथा है जब तक यह जाति रहेगी यह विषाद मुल्यांधता बर्बरता दासता सभी कुछ वैसी ही रहेगी | अंधायुग मात्र युद्ध के बाद की परिस्थितियाँ ही नहीं है | वह मनुष्य मन की वो सच्चाईयाँ है जिसे हम सभ्यता का नकाब ओड़ कर हमेशा छिपाते रहे लेकिन "पशु का उदय" होता ही है और यह टूटे पहिये सी मर्यादा एक बिखरे हुए पंगु समाज का सही दर्शन हमारे समक्ष रखती है | और वैसे भी "तनेजा अंधायुग किसी विशिष्ट स्थिति अथवा युग विशेष का द्योतक न होकर अतित वर्तमान और भविष्य को एक साथ अपने में समाए हुए है | अतः कुण्ठा हताशा, रक्तपात, घृणा, प्रतिशोध, विकृति, संत्रास, भय मूल्यहीनता, कुरूपता और विध्वंस के सर्वग्रासी सूचि भेदय अंधकार का संगत और सार्थक बिम्ब और प्रतिक है अंधायुग |"४ इन्ही सार्थक बिम्बों को सार्थकता के साथ प्रस्तुत किया गया है | भारती जी ने महाभारत की इस कथा में कही भी जान बुझकर आधुनिक प्रसंग नहीं डाले है | उन्होंने उसकी कथा को न ही तोडा मरोड़ा है | यह आज की ही कथा है | जो टूट चुकी है |

टुकड़े टुकड़े हो बिखर चुकी मर्यादा
उनको दोनों ही पक्षों ने तोडा है |

ये टूटी बिखरी मर्यादाए और इसमें जीने में विवश आम आदमी है और इस युद्ध की संस्कृति ने सभी को पशु बनने पर विवश किया है | और अश्वत्थामा को इसी युद्ध संस्कृति ने पशु बना दिया है | सुरेश गौतम "अंधायुग" के अश्वत्थामा के अन्दर की कुरूपता आधुनिक मनुष्य की कुरूपता है, उसके अन्दर की पाशविकता आधुनिक मानव की पाशविकता है उस आधुनिकता मानव की जिसके अन्दर निरंतर एक युद्ध-वृत्ति विद्यमान रहती है | इस तरह अश्वत्थामा केवल पौराणिक पात्र नहीं, आधुनिक मानव का प्रतिनिधि अथवा प्रतिक बन जाता है | आजीवन गलित कुण्ठा की दारुण यातना फेलने के लिए अभिशप्त अश्वत्थामा मर नहीं सकता क्योंकि उसे आजीवन पीड़ा पानी है | "निरंतर पीड़ा उसकी नियति है ?..... अश्वत्थामा की भाती वह भी न तो ठीक से जी सकता है और न मर ही पाता है |"६ इसी युग की जानबुझकर

अपनाई गई अन्धता का प्रतिक गांधारी है जो सत्य को देखना नहीं चाहती क्योंकि वह सत्य उसकी इच्छाओ की पूर्ति न कर सका | युयुत्सु का पात्र वह है जो युद्ध की यंत्रणा केवल बाह्य स्तर पर नहीं वह आतंरिक स्तर पर भी भोगता है | वह दोहरे स्तर पर जीता है | धर्म के लिए वह पाण्ड्वो की ओर से लड़ते हुए अपने मनुष्य होने के धर्म को निभाता है तो बाद में अपने माता पिता के पास लौटता है तो वह अपने व्यक्ति होने का धर्म भी निभाता है लेकिन उसे उपेक्षा ही मिलती है अपनी माँ से लेकर एक साधारण सैनिक तक उससे घृणा करते है | गांधारी कहती है |

बेटा
भुजाएँ ये तुम्हारी
पराक्रम भरी
थकी तो नहीं
अपने बन्धुजनो का
वध करते करते ?
.....
थका हुआ होगा यह
विदुर इसे फूलो की शय्या दो
कोई पराजित दुर्योधन नहीं है यह
सोये जो जाकर
सरोवर की
कीचड़ में" ७

वह अपनी आस्था तक को तोड़ देता है और वह कृष्ण तक के सामने नहीं झुकता | "युयुत्सु के जीवन की सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि युद्ध में अपने हाथ पैर खोने की वजा वह अपनी आस्था और विश्वास खो बैठता है |"८ धृतराष्ट्र वह शासन व्यवस्था है जो अपनी स्वार्थ लिप्तता में अंधी बन बैठी है | ये प्रहरी आज की आम जनता है जिसकी कोई सार्थकता नहीं रह गई है वह अभिशप्त है भटकने के लिए वाही संजय का पात्र "जहाँ महाभारत का ऐतिहासिक पात्र है वाही आधुनिक मानव का भी उस मानव का जो सचेत है, विवेकशील तथा तटस्थ | यह एक मात्र पात्र जो तटस्थ सचेतन एवं विवेकशील है जो मर्यादा, नैतिकता एवं सत्य को खण्डित होते हुए देखता है जो तटस्थ होकर भी भटक रहा है |"९ भारती जी ने अपने सभी पात्रो को आधुनिक संदर्भो में देखा है | युद्धों की भयानकता का संकेत उन्होंने दिया है उसने जलते हुए भविष्य को दिखाया है जो आज परमाणु बम के ढेर पर अपने खत्म होने की राह देख रहा है | अश्वत्थामा द्वारा छोड़ा गया ब्रह्मास्त्र आज के परमाणु बम का संकेत है और हिरोशिमा और नागासाकी की भयानकता भोग चुका है | ये विश्व | इसीलिए भारती जी कहते है |

यदि यह लक्ष्य सिद्ध हुआ तो नर पशु |
तो आगे आने वाली सदियों तक
पृथ्वी पर रसमय वनस्पति नहीं होगी
शिशु होंगे पैदा विकलांग और कुण्ठाग्रस्त
सारी मनुष्य जाति बौनी हो जाएगी
जो कुछ ज्ञान संचित किया है मनुष्यने
सतयुग में, त्रेता में, द्वापर में
सदा सदा के लिए होगा विलीन वह |
गेहू की बालो में सर्प फुक करेंगे
नदियों में बह बह कर आएगी पिघली आग
सूरज बुझ जायेगा
धरा बंजर हो जाएगी |"१०

इस नाटक का एक और महत्वपूर्ण पात्र है जो पुरे नाटक में कही रंगमंच पर नहीं है लेकिन फिर भी पूरी कथा का प्रमुख पात्र है वह कृष्ण इस पात्र को लेकर मर्यादा और मर्यादा हिनता की कितनी ही परिभाषा दी गई है | लेकिन भारती जी ने इन्हें कही अलौकिक शक्ति का स्वामी नहीं बताया है लेकिन वह हर बार गांधारी, युयुत्सु, विदुर, अश्वत्थामा की दृष्टी में अलग अलग रूप में परिभाषित हुए है | तुमने किया है प्रभुता का दुरपयोग" से कृष्ण के सारे दैवीय आवरण कट कर गिर जाते है | तनेजा जी ने कहा है "आरंभ और अंत को यदि छोड़ दे तो मूल नाटक में कृष्ण की भूमिका बहुत कुछ नायक का मुखौटा ओढे एक खलनायक जैसी ही है | अन्धायुग के कृष्ण न तो भविष्य के रक्षक है और नहीं अनासक्त |....
उनकी दृष्टी पूरी तरह साधन की बजाय साध्य पर टिकी है और उसके लिए वह कोई भी चाल या हथकंडा इस्तेमाल करने से हिचकिचाते नहीं है | लेकिन आश्चर्य होता है यह देखकर कि सभी पात्रो की असंगति का विश्लेषण करनेवाला नाटककार कृष्ण की असंगति पर ऊँगली रखने में क्यों डर जाता है |"११ लेकिन गांधारी ने ऊँगली उठाकर कहा था कि तुम यदि चाहते तो रुक सकता था युद्ध |" जब अश्वत्थामा की शापित किया तो भीम को क्यों नहीं वह भी तुम्हारे ईशारे पर हुआ था |

इस प्रकार पूरा नाटक कल, आज और आने वाले कल की कथा है |
मेरा दायित्व वह स्थित रहेगा
हर मानव – मन के उस वृत्त में
जिसके सहारे वह
सभी परिस्थितियों का अतिक्रमण करते
नूतन निर्माण करेगा पिछले पर
मर्यादा युक्त आचरण में
नित नूतन सृजन में
निर्भयता के
साहस के
ममता के
रस के
क्षय में
जीवित और सक्रिय हो ढूंढूंगा में बार बार

लेकिन भविष्य की ये आस्थाए सब कुछ धुल में मिल जाती है क्योंकि जो बचा है वह कोमल और सुंदर नहीं वह निष्क्रिय अपंग व्यक्तित्व, अमानुषिक और आत्मघाती अन्ध तो भविष्य पर प्रश्न चित्र लग जाता है |

क्या कोई सुनेगा
जो अन्धा नहीं है और विकृत नहीं है और
मानव भविष्य को बचायेगा ?
क्या कोई सुनेगा ?
क्या कोई सुनेगा ?.....१२

संदर्भ सूचि:

1. आधुनिक हिन्दी नाटक मिथक का प्रयोग और प्रभाव – डॉ. जी कमलाधरन – पेज.नं. – ८
2. अंधायुग और भारती के अन्य नाट्य प्रयोग- जयदेव तनेजा- पेज.नं. –१८
3. अंधायुग – धर्मवीर भारती - पेज.नं. –११-१२
4. अंधायुग और भारती के अन्य नाट्य प्रयोग- जयदेव तनेजा -पेज.नं.– १९
5. अंधायुग – धर्मवीर भारती - पेज.नं. –१३
6. अंधायुग एक सृजनात्मक उपब्धि- सुरेश गौतम - पेज.नं. –४१
7. अंधायुग – धर्मवीर भारती- पेज.नं. –५७-५८
8. अंधायुग और भारती के अन्य नाटक प्रयोग- पेज.नं. –जयदेव तनेजा - पेज.नं. –४७
9. अंधायुग एक सृजनात्मक उपब्धि – सुरेश गौतम - पेज.नं. –४९
10. अंधायुग भारती - पेज.नं. –९४-९५
11. अंधायुग और भारती के अन्य नाट्य प्रयोग –जयदेव तनेजा - पेज.नं. – ३७
12. अंधायुग – भारती- पेज.नं. –१३०-१३१